PART-**1**

यूनानी भूगोलवेत्ता- प्लेटो

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

यूनानी भूगोलवेत्ता (Greek Geographers)

पृथ्वी के विभिन्न भागों के पर्यावरण और उनके निवासियों की जीवन पद्धति पर वर्णनात्मक लेखन का आरंभ यूनान में नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हो गया था । तत्कालीन महाकवि होमर (Homer) की दो काव्य रचनाओं में महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। इसके पश्चात् के वर्षों में थेल्स (Thales), अनेग्जीमैण्डर (Anaximander), हेकैटियस् (Hecataeus), हेरोडोटस (Herodotus), अरस्तू (Aristotle), थियोफ्रेस्टस (Theophrastus), इरेटोस्थनीज (Eratosthenes), पोलीबियस (Polybius), हिप्पारचुस (Hipparchus), पोसिडोनियस (Posidoneus) आदि प्रमुख यूनानी विद्वानों ने भौगोलिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अग्रांकित पंक्तियों में इन यूनानी विद्वानों के योगदानों की संक्षिप्त चर्चा की गयी है।

(6) प्लेटो (Plato)

प्लेटो (428-348 ई० पू०) यूनान के शीर्षथ्थ दार्शनिकों में से एक थे। भौगोलिक विचारों के इतिहास में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे निगमनात्मक वैचारिक पन्धति के समर्थक थे। उन्होंने पृथ्वी को ईश्वरीय रचना माना और बताया कि पूथ्वी का आकार एक सम्पूर्ण पिण्ड होना स्वाभाविक है। प्लेटो के विचार से ईश्वर ने विश्व की रचना मनुष्य के उपयोग के उद्देश्य से की है और पृथ्वी का निर्माण मनुष्य के कार्य स्थल और उसके गृह प्रदेश के रूप में हुआ है। उनके अनुसार पृथ्वी ईश्वरी योजना का केन्द्र है जिसके चारों ओर आकाशीय पिण्ड चक्कर लगाते हैं। पृथ्वी की गोलाकार आकृति के विषय में प्लेटो का ज्ञान पूर्ववर्ती प्रचलित धारणाओं पर आधारित श्रा और इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हेतु उन्होंने कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया था।